**एक छोटी सी आश हो**

 एक छोटी सी आश हो, दोस्तों का हरपाल सुनहरा सा साथ हो

यादें सिमट जाएँ खिलते फूलो की तरह, और हरपाल बनता जैसे इतिहास हो

दोस्ती ऐसी हो जिसमे दोस्तों से एक आश हो

खिलते कमल की खुसबू  और रिश्तों में मधुर सी मिठास हो

मन विचलित हो उठे जब दोस्तों का ना साथ हो

ताक में बैठें रहे कुछ ऐसे, जैसे चाँद को ताकती चांदनी की रात हो

मासूम सी उमंग रहे मन में, जैसे उगते सूरज सा विकास हो

हर रूह विचलित हो उठे जब दोस्तों का ना साथ हो

याद आयें बीते हुए दिन, जब फिर सब बैठे साथ हो

ऐसी दोस्ती किस काम  की  जिसमे  यादों  का ना  साक्षात्कार  हो

किशोर पाठक